2015

AUG-SEP

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

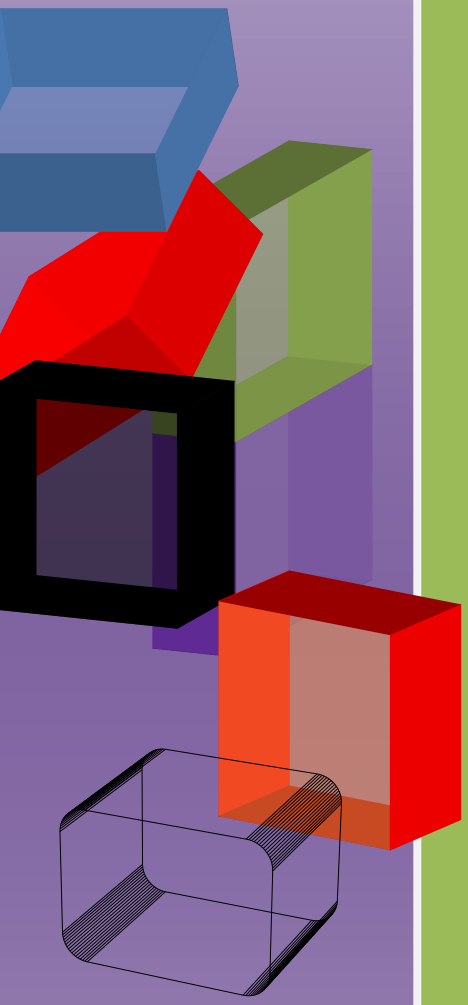

(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Impact factor: 2.125

V O L – I V I s s u e s : V

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues V
AUGUST-SEP 2015 ISSN 2278-5655

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र व छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन

अरूण कुमार (एम0एड0)
वी0एस0एस0डी0 कालेज,
कानपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित कराने हेतु कानपुर महानगर के व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में इंजीनियरिंग कालेज व मेडिकल कालेज के छात्र एंव छात्राओं को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन में व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। तथा प्रस्तुत शोध की गणना सांख्यिकीय के क्रांतिक अनुपात (C.R.) के माध्यम से की गयी है। अध्ययन के निष्कर्ष अग्रलिखित है।

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का कारण शैक्षिक असफलता प्रभावी कारणों के रूप में सामने आया है। व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का दूसरा कारण तनाव तथा पारिवारिक त्रुटिपूर्ण भूमिका का कारण सामने आया है। व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का तीसरा कारण दोषपूर्ण संगति, एकांकी जीवन तथा सामाजिक परिवेश प्रमुख कारण सामने आया है। व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का चौथा कारण बेरोजगारी की ज्वलन्त समस्या है जो कि नशे के दलदल में लडखड़ाने के लिये मजबूर करने में आया है। व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का पाँचवा कारण एक–दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा तथा उत्सुकता ने गुणात्मक वृद्धि की है।
व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एंव छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज भविष्य के प्रति समृद्वि एवं कल्याण का स्वप्न सजोये 21वीं सदी में प्रवेश करने को तत्पर है। आज भारत में युवाओं की कुल संख्या 35.6 करोड़ आकी गयी है। जो कि विश्व में अग्रणीय है।

आश्चर्य की बात यह है कि युवाओं में व्यसन की संख्या में दिनों दिन मकड़ी के जाल की भाँति गुणात्मक वृद्वि हो रही है और इसका शिकार उच्च तथा निम्न आय वर्ग के छात्र हो रहे है।

क्या यही नशे में मदहोश लड़खड़ाती भारत जैसे विशाल जनतंन्त्र की नई पौध अपने कंधों से ढोकर वर्तमान को तुम्हारे भविष्य में ले जायेंगी, इस कल्पना मात्र से दिल में दर्द एवं मस्तिष्क में पीड़ा से भयाक्रान्त हो उठता है।

वर्तमान में अधिक परिष्कृत अधिक प्रभावशाली रासायनिक एवं प्राकृतिक मादक पदार्थों के प्रचलित एवं परिवर्धित रूप आसानी से उपयोग के लिए उपलब्ध है। यह युग हेरोइन, स्मैक, ब्राउन सुगर, व्हाइट चाइना, मेन्डेक्स, एल0एस0डी0 पैथाटिन कैक, तथा विभिन्न प्रकार की मस्तिष्क तंत्रिकाओं को सुस्त अथवा उत्तेजित कर देने

वाली बाखी चुरेट्स अथवा एस्टोराइट्स ग्रुप की दवाओं का युग हो गया है। इनमें से अधिकांश अल्लिखित पदार्थ दर्द निवारक, अचेत करने की उपचारक औषधियों अथवा उत्तेजित कर देने एवं हारमोन्स में परिवर्तन कर देने के कैप्सूल, टेबलेट्स, इन्जेक्सन के रूप में प्रयोग किये जाते है। स्वाभाविक है कि इनकी आसान उपलब्धि आदत डालने में और हल्के नशे से गहरे नशे की ओर बढ़ने से प्रभावी भूमिका निभाती है। सर्वाधिक चिन्ताजनक विषय मादक पदार्थों के उद्योग एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के रूप में विकसित होने का है।

अपार धन तथा फास्ट लाइफ तीव्रता से बदलते सुख प्राप्त के साधन और स्त्रोत बड़ी संख्या में लोगों को इस व्यवसाय के विषधर चक्र के घेरे में लेते जा रहे है। उत्पादन और व्यसय की नवीनतम तकनीक एवं विधाओं को अपनाकर उपभोक्ताओं को आकर्षित करने में यह उद्योग निरन्तर सफल हो रहा है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एंव महत्व :–

रूसों ने अपनी पुस्तक ''द सब्जेक्ट ऑफ सोशल कान्ट्रेक्ट'' में लिखा है कि जो देश, ''अपने देश के प्रतिभावान बच्चों की प्रतिभा को सुरक्षित एवं समायोजित नहीं रखता, वह देश अवनति के गर्त में गिर जाता है''।

ऐसी स्थिति में जहां भारत जैसे विकासशील देश को निरन्तर आगे बढ़ने के लिए युवा ऊर्जा की राष्ट्रहित में आवश्यकता है। वही युवा नशीली संस्कृति की गिरफ्त में तेजी से आकर अपना शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक व नैतिक पतन के साथ बौद्विक क्षमताओं को नष्ट कर रहा है। चिन्तनीय विषय तो यह है कि इस मादक द्रव्य के व्यसनकर्ताओं की संख्या में निरन्तर वृद्वि हो रही है। क्या ऐसी स्थिति में भारत का युवा 21वीं सदी में भारत जैसे विकासशील देश को विकसित देश के रूप में स्थापित कराने में सहयोग कर सकेगा, क्या यह नशीली संस्कृति भारत के विकास में बाधक नहीं होगी।

अतः ऐसी नशीली संस्कृति जिसके परिणाम स्वरूप व्यवसनकर्ता, अपने शारीरिक मानसिक, नैतिक पतन के साथ बौद्धिक क्षमता को नष्ट करके पारिवारिक विघटन एवं विनाश के पश्चात सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करता हुआ अदृश्य राष्ट्रीय क्षति का कारण बनता है। कि विषय में शोधकर्ता ने इस आवश्यकता का अनुभव किया कि ऐसे कौन–कौन से कारण है जिनसे नशाखोरी की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। ऐसे ही अनुत्तरित प्रश्नों का वैज्ञानिक उत्तर प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत विषय एवं समस्या का चयन किया गया है।

3. अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों का शैक्षिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।
2. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों का पारिवारिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।
3. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों का सामाजिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।
4. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययरनत् छात्रों का आर्थिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।
5. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्रों का व्यावसायिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।
6. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

4 अध्य्यन का सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध में केवल व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में कानपुर नगर के छात्रों को चुना गया है। जिसमें 18–22 वर्ष के आयु वर्ग के छात्रों को चुना गया है तथा न्यादर्श के रूप में पाँच व्यावसायिक शिक्षण संस्थाओं से 50 छात्र तथा 50 छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया हैं

5 शोध विधि :–

समस्या की प्रकृति एवं आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए शोध कार्य हेतु वर्णनात्मक शोध के सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का चयन किया गया है।

6. अध्ययन का न्यायदर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सोद्देश्य न्यायदर्श विधि का उपयोग करके अध्ययन से सम्बन्धित जनसंख्या से प्रतिदर्श का चुनाव करने हेतु व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कालेजो के छात्र व छात्राओं को न्यायदर्श के रूप में सम्मिलित किया।

न्यायदर्श तालिका–1

कानपुर महानगर के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र व छात्रायें

इंजीनियरिंग क्षेत्र		मेडिकल क्षेत्र	
छात्र	छात्रायें	छात्र	छात्रायें
30	30	20	20

योग= 60	योग= 40
कुल योग = 100	

7. प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली Professional Educatione Study Student Inireasing Durgs Addiction Questionnaire [PESSIDAQ] का प्रयोग किया गया है।

8. प्रस्तुत सांख्यिकीय प्रविधियाँ :–

प्रदत्तों के संकलन व मूल्यांकन के पश्चात शोधकर्ता ने सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण किया प्रस्तुत अध्ययन व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, तथा मानक त्रुटि का प्रयोग किया गया है।
परिकल्पनाओं का परीक्षण

तालिका संख्या 2
व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक क्षेत्र में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	3.94	0.767				
छात्रायें	50	3.06	0.867	0.88	0.164	5.367	0.01

तालिका संख्या (2) के अनुसार शैक्षिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 3.94 छात्राओं के मध्यमान 3.06 से अधिक है, तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 5.367 है, जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.58 से अधिक है। अतः यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अर्थात व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। अतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का व्यावयायिक शैक्षिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। अर्थात व्यावयसायिक शिक्षा

के शैक्षिक क्षेत्र में छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में नशें की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है इसलिए यहाँ पर परिकल्पना नं0 1 को 0.01 विश्वास स्तर पर स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 3

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एंव छात्राओं के पारिवारिक क्षेत्र में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	3.76	0.797				
छात्रायें	50	3.12	0.872	0.64	0.167	3.831	0.01

तालिका संख्या (3.) के अनुसार पारिवारिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 3.76 छात्राओं के मध्यमान 3.12 से अधिक है, तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 3.831 है, जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.58 से अधिक है। अतः यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पारिवारिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। तथा छात्र एवं छात्राओं में नशें की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की नशे की प्रवृत्ति कम है। पारिवारिक क्षेत्र छात्रों में नशे की प्रवृत्ति को बढ़ता है। इसलिए यहाँ पर परिकल्पना नं0 2 को 0.01 विश्वास स्तर पर स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक क्षेत्र में बढ़ नही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, तथा क्रान्तिक अनुपात मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	3.86	0.756				
छात्रायें	50	3.22	0.910	0.64	0.167	3.825	0.01

तालिका संख्या (4.) के अनुसार सामाजिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 3.86 छात्राओं के मध्यमान 3.22 से अधिक है, तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 3.825 है, जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.58 से अधिक है। अतः यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का सामाजिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। तथा छात्र एंव छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति कम है, सामाजिक क्षेत्र छात्रों में नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। इसलिए यहाँ पर परिकल्पना नं0 3 को 0.01 विश्वास स्तर पर स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 5.

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक क्षेत्रमें बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	3.68	0.713				
छात्रायें	50	3.22	0.887	0.46	0.161	2.858	0.01

तालिका संख्या (5.) के अनुसार आर्थिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 3.68 छात्राओं के मध्यमान 3.22 से अधिक है, तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 2.858 है , जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.858 है, जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2. 58 से अधिक है। अतः 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का आर्थिक क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। तथा छात्र एवं छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नशें की प्रवृत्ति कम है आर्थिक क्षेत्र छात्रों में नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। इसलिए यहाँ पर परिकल्पना नं0 4 को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 6.

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एंव छात्राओं के व्यक्तिगत क्षेत्र में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	9.75	2.157				
छात्रायें	50	9.06	2.419	0.66	0.458	2.640	0.01

तालिका संख्या (6.) के अनुसार व्यक्तिगत क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 9.75 छात्राओं के मध्यमान 9.06 से अधिक है तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 2.640 है, जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.58 से अधिक है। अतः यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का व्यक्तिगत क्षेत्र नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। तथा छात्र एवं छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। अतः व्यक्तिगत क्षेत्र छात्रों में नशे की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। इसलिए यहाँ पर परिकल्पना नं0 5 को स्वीकार किया जाता है।

तालिका संख्या 7.

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा मानक त्रुटि के मान

प्रतिदर्शन	(N)	(M)	(S.D)	Mean (D)	(S_{Ed})	(C.R)	सार्थकता स्तर
छात्र	50	24.92	2.602				
छात्रायें	50	21.68	2.744	3.24	0.535	6.058	0.01

तालिका संख्या (7.) के अनुसार छात्रों का मध्यमान 24.92 छात्राओं के मध्यमान 21. 68 से अधिक है, तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 6.058 है जो विश्वास स्तर 0.01 पर तालिका मान 2.58 से अधिक है। अतः यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही, तथा छात्र एवं छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। जो कि परिकल्पना नं0 6 को अस्वीकृत करती है। परिकल्पना नं0 6 व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। जो कि एक शून्य परिकल्पना है। इस शून्य परिकल्पना को तालिका नं0 (4.7) का विवरण अस्वीकृत करता है। जिसका विश्वास स्तर 0.01 लें

अतः व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति के क्षेत्रों का ग्राफीय प्रदर्शन

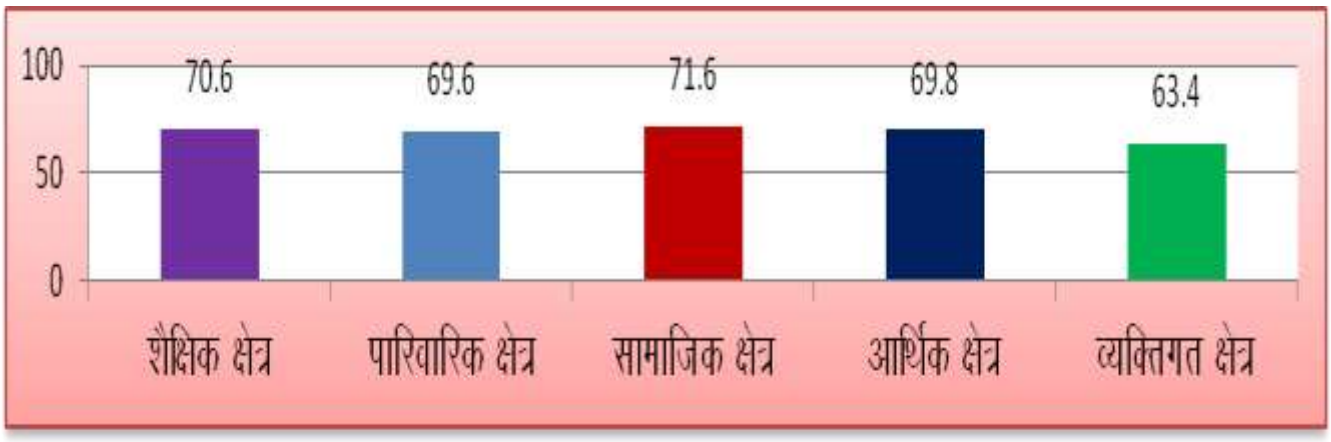

चित्र नं0–1

9. निष्कर्ष :–

1. विद्यार्थियों के शैक्षिक क्षेत्र में नशीले पदार्थों के सेवन में असफलता प्रभावी कारणों के रूप में सामने आया हैं जिसमें छात्रों का प्रतिशत 80 व छात्राओं का 61.2 प्रतिशत प्राप्त हुआ तथा कुल 70.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। जो कि द्वितीय प्रमुख कारण है।
2. विद्यार्थियों के पारिवारिक क्षेत्र में नशीले पदार्थों के सेवन में तनाव तथा पारिवारिक त्रूटिपूर्ण भूमिका प्रमुख कारण सामने आया है। जिसमें छात्रों का प्रतिशत 76.8 व छात्राओं का 62.4 प्रतिशत प्राप्त हुआ तथ कुल 69.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। जोकि चतुर्थ प्रमुख कारण है।
3. विद्यार्थियों के सामाजिक क्षेत्र में नशीले पदार्थों के सेवन में संगति, एकांकी जीवन तथा सामाजिक परिवेश प्रमुख कारण सामने आये है। जिसमें छात्रों का प्रतिशत 78.8 व छात्राओं का 64.4 प्रतिशत प्राप्त हुआ तथा कुल 71.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ जो कि प्रथम प्रमुख कारण है।
4. विद्यार्थियों के आर्थिक क्षेत्र में नशीले पदार्थों के सेवन में निराशा तथा बेरोजगारी आज की ज्वलन्त समस्या हैं, जो कि नशे के दलदल में

किशोर–टांगों को लडखड़ाने के लिए मजबूर करने में सक्षम है। जिसमें छात्रों का प्रतिशत 75.2 व छात्राओं का 64.4 प्रतिशत प्राप्त हुआ हैं। तथा कुल 69.8 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। जोकि तृतीय प्रमुख कारण हैं।

5. विद्यार्थियों के व्यक्तिगत क्षेत्र में नशीले पदार्थों के सेवन में कार्य करने की अधिकता एक–दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा तथा उत्सुकता ने छात्रों में एक नशीली संस्कृति जन्म दिया और सम्बन्धित मित्रों में उसकी गुणात्मक वृद्धि हुई है। जिसमें छात्रों का प्रतिशत 66.4 व छात्राओं का 60.4 प्रतिशत प्राप्त हुआ है तथा कुल 63.4 प्रतिशत जो कि सबसे कम प्रभावी कारण है।
6. व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। छात्र छात्राओं की अपेक्षा अधिक नशीले पदार्थों का सेवन करते है। जबकि छात्राओं की संख्या छात्रों की अपेक्षा कम है।

10. शैक्षिक निहितार्थ :–

1. व्यावसायिक छात्र व छात्राओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए उत्तम शैक्षिक परिवेश की आवश्यकता है।
2. व्यासायिक छात्र व छात्रओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए नैतिक सामाजिक संगति की आवश्यकता है।
3. व्यावसायिक छात्र व छात्राओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए उत्तम पारिवारिक पृष्ठ भूमि तथा अनुकूल पर्यावरण की आवश्यकता थी।
4. व्यावसायिक छात्र व छात्राओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति की आवश्यकता है।
5. व्यावसायिक छात्र व छात्राओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ

आर0ए0, शर्मा (2009), शिक्षा अनुसंधान। मेरठ आर. आर.लाल बुक डिपो, पृष्ठ संख्या–91।

गैरेट, हेनरी ई0 (2005), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय। नई दिल्ली कल्याणी पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या– 211,242, 243।

दास, गोस्वामी तुलसी (2010), रामचरित मानस, लंका काण्ड गोरखपुर गीता प्रेस, दोहा संख्या 63, पृष्ठ संख्या–660

पाण्डेय, नारायणदत्त (1988)– श्री दुर्गा सप्तसती, गोरखपुर गीता प्रेस, पृष्ठ स0–95।

राय, पारसनाथ, (1999), अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन पृष्ठ सं0–91–285।

सिंह, अरूण कुमार (2014), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना मोतीलाल बनारसी दास, पृष्ठ संख्या–284,30।

Aghali A (1998) The study and comparison of factors affecting smoking and tendency towards it among high school male students of isfahan from the viewpoint of students, teachers and parents. National Res. pp: 43.

Bakhshani N (2002) The guide to prevent and treat addiction: Cognitive- behavioral moders. First ed. zahedan, Iran: University of Medical Sciences Publ. pp:32.

अन्य– समय–समय पर प्रकासित पत्र पत्रिकायें एवं समाचार पत्र।

दैनिक जागरण, 9 नवम्बर 2014, मुद्दा नशों में नशा। पृष्ठ संख्या–15

दैनिक जागरण 15 नवम्बर 2014 आंतिकियों के पास जा रहा नशे का पैसा। पृष्ठ संख्या–1,12

हिन्दुस्तान, 15 नवम्बर 2014, मोदी बोले आओ देश को नशामुक्त बनाये। पृष्ठ संख्या 1,11

विभिन्न वेब साइड्–

www. education of Research. com/ abstract/ India.

2. www. en.wikipedia. org/wiki/drug. Addiction

3. Drugs Addiction in education system- goolge.com.

4. Drugs Addiction in professional education system- google.com.